MAHARAJA COLLEGE ,ARA

PG @ SEM- I

विद्यापति : भक्त कवि या श्रृंगारी कवि

विद्यापति के प्रसिद्धि का आधार पदावली है। पदावली में मुख्य रूप से श्रृगांर और भक्ति संबंधी रचनाएँ संकलित है। इसके अलावा कवि ने प्रकृति चित्रण के साथ–साथ तत्कालीन समाज की विसंगतियों की ओर भी संकेत किया है–

''पिया मोर बालक हम तरुनी ।
कोन तप चूकि भेलहुँ जननी ।।''

भक्त या श्रृंगारी :– कवि ने पदावली में कृष्ण, शिव, दुर्गा, गंगा आदि देवी–देवताओं की स्तुति की है। उनकी भक्ति किसी एक पंथ या संप्रदाय से बंधी हुई नहीं थी। वे एक साथ शैव, शाक्त और वैष्णव थे। वे शिव और विष्णु एक ही रूप की दो कलाएँ मानते थे। अपने एक पद में कवि ने इसका चित्राण इन शब्दों में किया है–

''भल हरि भल हर भल तुअ कला।

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

खन पित बसन खनहि बघ छला।।''

वहीं, दूसरी तरफ पदावली के अधिकतर पद श्रृंगारिक भावनाओं को अपने में समेटे हुए है। यहाँ तक कि, राधा और कृष्ण का वर्णन भी श्रृंगार रस को ही उजागर करता है। राधा और कृष्ण को वे साधरण नायक–नायिका के रूप में चित्रित करते हैं। इनकी श्रृंगारिक प्रवृतियाँ इतनी प्रवल है कि अधिकतर विद्वानों ने इन्हें भक्त कवि न कहकर श्रृंगारी कवि कहा है। इसके साथ ही हिंदी साहित्य के इतिहास में एक नया विवाद खड़ा होता है।

विद्यापति मूलतः सौंदर्य और प्रेम के कवि हैं। कवि का ध्यान श्रृंगार के चित्रण में अधिक रमा है। श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग और वियोग चित्रण में उन्हें पूरी सफलता मिली है। नारी के अंग–प्रत्यंग का जितना रसपूर्ण और मांसल चित्रण इन्हों ने किया है, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं । उनके कई पद तो ऐसे हैं जिनका वर्णन बच्चों या बड़ों के सामने करने में हिचक होती है।